गाथा (GAATHA)
स्त्री अस्मिता और विमर्श की सहकर्मी-समीक्षित, अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

**ISSN : 3049-3463(Online)**
Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025
Page No.- 25-34
©2025 Gaatha
https://gaatha.net.in
**Author :**

**डॉ. अरुण कुमार**
असिस्टेंट प्रोफेसर, राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना, बिहार.

Corresponding Author :

**डॉ. अरुण कुमार**
असिस्टेंट प्रोफेसर, राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना, बिहार.

## नौटंकी 'सुल्ताना डाकू उर्फ गरीबों का प्यारा' की सामाजिक संवेदना

नौटंकी उत्तर भारत, उत्तर भारत से सटे नेपाल और पाकिस्तान के मुल्तान क्षेत्र में प्रचलित लोकनृत्य और लोकनाट्य की एक अत्यंत लोकप्रिय शैली है। एक प्रचलित लोककथा के अनुसार नौटंकी का नाम मुल्तान (अब पाकिस्तान) की 'नौटंकी' नामक राजकुमारी के नाम पर पड़ा । पंजाब के स्यालकोट के राजा राजो सिंह का छोटा बेटा फूल सिंह एक दिन शिकार खेलकर महल आता है। वह अपनी भाभी से पानी माँगता है। उसकी भाभी पानी न देकर व्यंग्य करते हुए कहती है कि अब तुम्हें विवाह कर लेना चाहिए। फूल सिंह द्वारा पूछने पर कि उसके विवाह के लिए राजकुमारी कहाँ मिलेगी तो उसकी भाभी मुल्तान की राजकुमारी नौटंकी के सौन्दर्य का बखान करती है। फूल सिंह राजकुमारी नौटंकी के सौन्दर्य के बारे में सुनकर उससे प्रेम करने लगता है और उससे विवाह करने के उद्देश्य से मुल्तान की ओर प्रस्थान करता है। वह मुल्तान पहुंचकर शाही मालिन के हाथों राजकुमारी नौटंकी के पास एक हार भेजता है । नौटंकी के पूछने पर मालिन कहती है कि यह हार मेरे भाँजे की बहू ने बनाया है। राजकुमारी नौटंकी भाँजे की बहू से मिलने की इच्छा जाहिर करती है तो राजकुमार फूल सिंह स्त्री के वेश में नौटंकी के शयन कक्ष में पहुँच जाता है। रात में साथ सोने के क्रम में फूल सिंह का भेद खुल जाता है और दोनों में प्रेम हो जाता है। अंततः दोनों की शादी हो जाती है।

कहा जाता है कि सबसे पहले मुल्तान में राजकुमारी नौटंकी और राजकुमार फूल सिंह के प्रेम को आधार बनाकर नौटंकी नाम से लोकनाट्य खेलने का प्रचालन शुरू हुआ। उसके बाद नौटंकी लोकप्रिय होकर पूरे उत्तर भारत में फैल गई। नौटंकी के संबंध में कुछ विद्वानों की अलग-अलग राय है। भरत मुनि ने अपने 'नाट्य शास्त्र' में

जिस सट्टक को नाटक का एक भेद माना है, वही नौटंकी है। इसके विषय में जयशंकर प्रसाद और हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है कि सट्टक नौटंकी के ढंग के ही एक तमाशे का नाम है। जयशंकर प्रसाद ने अपने निबंध 'रंगमंच' में नौटंकी को नाटक का अपभ्रंश माना है। जयशंकर प्रसाद का कहना है कि 'नौटंकी प्राचीन रागकाव्य या गीतिकाव्य की ही स्मृति है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, 'नौटंकी का वर्तमान रूप चाहे जितना आधुनिक हो, उसकी जड़ें बड़ी गहरी हैं।' रामबाबू सक्सेना ने अपनी पुस्तक 'तारीख़-ए-अदब-ए-उर्दू' में लिखा है कि 'नौटंकी लोकगीतों और उर्दू कविता के मिश्रण से पनपी है।' कालिका प्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर' का मानना है कि 'नौटंकी का जन्म संभवतः ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में हुआ था।' 13वीं शताब्दी में अमीर खुसरो के प्रयत्न से नौटंकी को आगे बढ़ने का अवसर मिला। खुसरो ने अपनी रचनाओं में जिस भाषा का प्रयोग किया है, वैसी ही भाषा और उन्हीं के छंदों से मिलते-जुलते छंदों का प्रयोग नौटंकी में होता है। 16 वीं शताब्दी के प्रसिध्द इतिहासकार अबुल फज़ल की आइन-ए-अकबरी में भी नौटंकी का उल्लेख है।

कुछ विद्वानों का मानना है कि 'नाटक' से 'नाटकी' एवं 'नाटकी' से 'नौटंकी' नाम पड़ा। विद्वानों का एक वर्ग यह भी मानता है कि इसका टिकट नौटंकी अर्थात नौ टका होने के कारण इसका नौटंकी नाम पड़ गया। कुछ विद्वान् यह मानते है कि मथुरा-वृन्दावन के भगत एवं रास और राजस्थान की 'ख्याल' लोक विधा से ही नौटंकी का जन्म हुआ। स्वांग या संगीत एवं उत्तर भारत की रामलीला जैसी अन्य लोक विधाओं की लोकप्रियता कम नहीं रही, लेकिन अपने विविध आयामी स्वरूप के कारण नौटंकी ने जो लोकप्रियता प्राप्त की, वह अकल्पनीय है। समाज का अभिजात वर्ग इसे 'सस्ता' और 'अश्लील' समझता है इसके बावजूद यह लोक-कला आम जनता के बीच लोकप्रिय होती चली गई।

'नौटंकी' को 'स्वांग' का ही एक रूप माना जाता है पर दोनों में कुछ मौलिक अंतर हैं। 'नौटंकी' और 'स्वांग' में एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि जहाँ 'स्वांग' अधिकतर धार्मिक विषयों से संबन्धित होता है और उसमें गंभीरता होती है तो दूसरी तरफ 'नौटंकी' के विषय प्रेम और वीर-रस पर आधारित होते हैं और उनमें व्यंग्य की पुट अधिक होती है। 'नौटंकी' का कथानक प्रेम, वीरता, साहस से संबंधित होता है। वह किसी लोकप्रसिद्ध वीर, साहसी पुरुष के जीवन पर आधारित होता है। इनकी कथाओं का सम्बन्ध पौराणिक आख्यानों से न होकर लौकिक वीर, प्रणयी, साहसिक, भक्त पुरुषों के कार्यों से होता है। सामान्यतः नौटंकी में किसी प्रसिद्ध लोककथा को विषय बनाया जाता है लेकिन श्रृंगार और वीर रस प्रधान विषयों को ही अधिक महत्व मिला है। नौटंकी में एक प्रेम कहानी होती है और उसमें एक नौ टंक तौलवाली कोमलांगी नायिका भी होती है। नौटंकी शुरुआत से ही संगीत-रूपक में प्रस्तुत की जाती है और वह रूप ऐसा प्रचलित हुआ कि अब प्रत्येक संगीत-रूपक या स्वाँग ही नौटंकी कहा जाने लगा है। पंजाब में 'गोपीचन्द', 'पूरन भक्त' और 'हकीकत राय' का संगीत अत्यधिक लोकप्रिय है।

उत्तर भारतीय ढंग की नौटंकी की जन्मस्थली उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश के दो जिले हाथरस और कानपुर इसके प्रधान केंद्र हैं। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी ज़िलों फ़र्रुख़ाबाद, शाहजहाँपुर, कानपुर, एटा, इटावा, मैनपुरी, मेरठ, सहारनपुर आदि में इसका विशेष प्रचार है। उधर 'चिभुवन-मण्डली' की नौटंकी विशेष प्रसिद्ध है। मध्य प्रदेश के ग्वालियर की नौटंकी भी प्रसिद्ध है। रास मण्डलियों की तरह नौटंकी की भी मण्डलियाँ होती हैं, जो एक स्थान से दूसरे स्थानों पर घूम-घूमकर नौटंकी का प्रदर्शन करती हैं। नौटंकी ग्रामीण जनता की नाट्यवृत्तियों का समाधान करने वाले मुख्य साधनों में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस पर 'पारसी थियेटरों' तथा 'नाटकीय रंगमंच' का भी विशेष प्रभाव है।

लोकनाट्य के कई विद्वानों का मानना है कि 'नौटंकी' 'स्वांग' का ही एक अलग विकसित रूप है। नौटंकी की कथाएं किसी व्यक्ति या महत्वपूर्ण विषय पर आधारित होती हैं, जैसे 'आल्हा-ऊदल की नौटंकी, 'सुल्ताना डाकू' की

नौटंकी आदि। सुल्ताना डाकू नामक नौटंकी इसी नाम के उत्तर प्रदेश के बिजनौर में हुए एक डाकू की कहानी पर आधारित है। आज़ादी के आंदोलन के दौरान सुल्ताना डाकू से मिलते-जुलते विषय पर बहुत सी नौटंकियां उत्तर भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में खेली जाती थीं। इन नौटंकियों ने जन-साधारण को आज़ादी के आन्दोलन में शामिल होने की प्रेरणा दी।

यह लोकनाट्य जनमानस के मन से भीतर तक जुड़ी हुई है। नौटंकी को गाँव वालों के लिए सामाजिक समस्याओं के प्रति जानकारी प्रदान करने, सामाजिक कुरीतियों से परिचित कराने और सस्ता किंतु स्वस्थ मनोरंजन का साधन माना जाता है। भारतीय समाज में मौजूद सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं जैसे जातिप्रथा, दहेज़-प्रथा, आतंकवाद, भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिक दंगों के विरुद्ध नौटंकियाँ देखी जा सकती हैं। नौटंकियाँ हमेशा से आम जनता को उनके जीवन से जुडी समस्याओं के प्रति जागरुक करती रही है। किसी भी तरह के अन्याय के विरोध में उठ खड़े होने की प्रेरणा भी नौटंकी से मिलती है।

दर्शकों की रूचि बनाए रखने के लिए नौटंकियों में अक्सर प्रेम-सम्बन्ध के तत्व होते हैं जो कभी-कभी अश्लीलता की श्रेणी में आ जाता है। कई अश्लील नौटंकियाँ भी सौ-डेढ़ सौ वर्षों से चलती आ रहीं हैं। इसी तरह की नौटंकियों के कारण अक्सर नौटंकी की शैली बदनाम भी होती आई है। पारम्परिक रूप से नौटंकियों के माध्यम से धन कमाने के उद्देश्य से यह ज़रूरी था कि दर्शकों को कभी भी ऊबने न दिया जाए, इसलिए अधिकतर नौटंकियों को 10 मिनट या उस से कम अवधि की घटनाओं को एक क्रम में जोड़कर बनाया जाता है। हर भाग में दर्शकों की रुचि बनाए रखने की कोशिश की जाती है। नौटंकी की कहानी को दिलचस्प बनाए रखने के लिए वीरता, प्रेम, मज़ाक़, गाने-नाचने और धर्म को मिलाया जाता है। कथाकार का यह प्रयास रहता है कि दर्शकों की भावनाएँ लगातार ऊपर- नीचे होती रहें।

रासलीला या अन्य लोक नाटकों के समान नौटंकी का रंगमंच भी अस्थिर, कामचलाऊ और निजी होता है। नौटंकी में पुरुष ही स्त्रियों का वेश धारण करते हैं और उनका अभिनय करते हैं। दृश्यों के अभाव में सूत्रधार मंच पर आकर दृश्यों के घटित होने के स्थान, समय और पात्रों के विषय में दर्शकों को सूचना दिया करता है। किसी दूसरे क्षेत्र की नौटंकी में अनेक स्त्री-पुरुष पात्र होते हैं। स्त्री-पात्रों का अभिनय या तो विवाहिता या कुमारी स्त्रियाँ करती हैं अथवा वेश्याएँ करती हैं। वेश्याएँ दृश्यान्त में मंच पर आकर अपने नृत्य-गान, हाव-भाव, मुद्राओं से जनता का मनोरंजन करती हैं और नेपथ्य में अभिनेताओं को रूपसज्जा आदि करने का अवकाश देती हैं। रंगभूमि में एक ओर गायकों, वाद्य वादकों का समूह रहता है, जो अभिनय, संवाद, नृत्य की तीव्रता, उत्कटता को बढ़ाता रहता है। वाद्य यंत्रों में तबला और नगाड़े का विशेष प्रयोग होता है। तबले के तालों और नगाड़े की चोबों की गूँज रात में मीलों दूर सुनाई पड़ती है, जिसके आकर्षण से सोते हुए ग्रामीण भी नौटंकी देखने पहुँच जाते हैं।

रुचि-वैचित्र्य के समाधान, स्वाद के परिवर्तन और शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए हास्यपूर्ण प्रसंगों की योजना रहती है, जिसमें नारी-पुरुष के रूप में पात्र प्रहसन प्रस्तुत करते हैं। प्राय: संवाद पद्य प्रधान होते हैं। अभिनेता मंच पर दर्शकों की ओर जा-जाकर उत्तर-प्रत्युत्तर देतें हैं और प्रश्न करते हैं। इस प्रकार संवाद प्राय: प्रश्नोत्तर शैली के होते हैं। उनमें उत्तेजना, साहस और दर्पपूर्ण उक्ति का बाहुल्य और प्रेम-प्रसंगों का आधिक्य रहता है। अधिकतर किसी वीर नायक को प्रेम के जाल में फँसा दिखाया जाता है, जिसके कारण उसका पतन हो जाता है। एक ओर सीमित मात्रा में नृत्य, गायन, काव्य पाठ, कथा-पाठ, मूक अभिनय एवं हास्य के धागों से बुनी ऐतिहासिक, पौराणिक अथवा समसामयिक विषय पर केन्द्रित कथा-वस्तु की लोकशैली में प्रस्तुति, नौटंकी की विशेषता रही है तो दूसरी ओर भाषा, संगीत, वेश-भूषा एवं चरित्र की दृष्टि से हिन्दू एवं मुस्लिम संस्कृति का समन्वय इसका स्वरुप। रामलीला व रासलीला

का स्वरुप धार्मिक रहा है तो नौटंकी का स्वरूप धर्मनिरपेक्ष।

नौटंकी का रंगमंच प्राय: ऊंचा और साधारण होता है, जिसका निर्माण खुले मैदान में लट्ठों, बाँसों और कपड़ों की चादरों से किया जाता है। दर्शक खुले आसमान के नीचे बैठकर आनंद लेते हैं तो कभी-कभी उनके लिए दूर तक चाँदनी तान दी जाती है और रंगभूमि बड़े-बड़े तख्तों से बनायी जाती है। प्राय: एक परदे का उपयोग किया जाता है, जो अभिनेताओं के रंग-भूमि में आने पर उठता है और उनके चले जाने पर गिरता है। कभी-कभी कार्य व्यापार चलते समय पात्रों का प्रवेश नेपथ्य अथवा मैदान से दर्शकों के बीच से भी होता है। इसका प्रेक्षागृह इतना बड़ा बनाया जाता है कि चाँदनी के नीचे सैकड़ों दर्शक बैठ जाएँ और न बैठ सकने पर पास के खुले मैदान को उपयोग में लाया जाता है। अब इसमें अनेक दृश्य होने लगे हैं, किन्तु प्रत्येक दृश्य की सूचना सूत्रधार ही मंच पर आकर देता है। वही प्रारम्भ में लीला या कहानी के लेखक, पात्र तथा कथा आदि के विषय में दर्शकों को सूचना देता है और उनमें उनके प्रति उत्सुकता तथा जिज्ञासा उत्पन्न करता है।

नौटंकी में कविता और साधारण बोलचाल की भाषा का मिश्रण होता है। पात्र आपस में बातें करते हैं लेकिन गहरी भावनाओं और संदेशों को अक्सर तुकबंदी द्वारा प्रकट करते हैं। गाने में सारंगी, तबले, हारमोनियम और नगाड़े जैसे वाद्य इस्तेमाल होते हैं। उदाहरण के लिए 'सुल्ताना डाकू' के एक रूप में सुल्ताना अपनी प्रेमिका को समझाता है कि वह ग़रीबों की सहायता करने के लिए पैदा हुआ है और इसीलिए अमीरों को लूटता है।उसकी प्रेमिका नील कँवल कहती है कि उसे सुल्ताना की वीरता पर गर्व है (इसमें रुहेलखंड की खड़ीबोली का प्रयोग हुआ है।)

सुल्ताना कहता है-

प्यारी कंगाल किस को समझती है तू?
कोई मुझ सा दबंगर न रश्क-ए-कमर
जब हो ख़्वाहिश मुझे लाऊँ दम-भर में तब
क्योंकि मेरी दौलत जमा है अमीरों के घर
नील कँवल कहती है-
आफ़रीन, आफ़रीन, उस ख़ुदा के लिए
जिसने ऐसे बहादुर बनाए हो तुम
मेरी क़िस्मत को भी आफ़रीन, आफ़रीन
जिस से सरताज मेरे कहाए हो तुम।

नौटंकी के अन्त में परिणाम उपदेशपूर्ण दिखाया जाता है। जहाँ भक्तचरित दिखाया जाता है, वहाँ भक्त के मार्ग में पूरी नौटंकी के दौरान अनेक कठिनाइयाँ आती हैं लेकिन अन्त में उसकी जीत होती है। नौटंकी के समाप्त होने तक उसका उद्देश्य प्रकट हो जाता है इसके बावजूद सूत्रधार अन्त में मंच पर आकर भलाई करने और बुराई से बचने व सत्य-धर्म के मार्ग पर चलने की शिक्षा देता है। प्रकाश की योजना आद्यन्त एक समान रहती है। नौटंकी के प्रारम्भ होने का समय रात के आठ बजे से और समाप्त होने का समय प्रात: पाँच बजे तक है। कभी-कभी कथा के विस्तार या जमी हुई भीड़ के कारण कार्यक्रम सूर्योदय तक चलता रहता है। प्राय: नौटंकी कार्तिक, मार्गशीर्ष अथवा चैत्र, वैशाख के महीनों में हुआ करती है। मेलों के अवसरों पर इनका विशेष आयोजन होता है। उत्तर प्रदेश के मेलों का नौटंकी अभिन्न अंग होती है। इसके अतिरिक्त साप्ताहिक बाज़ारों में भी नौटंकी होती हैं।

नौटंकी' अथवा 'स्वांग का मुख्य छंद चौबोला है। इसके अलावा नौटंकी में बहरेतबील, चौबोला, दोहा, लावणी, सोरठा, दौड़ आदि छंदों का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। इस चौबोले के दो रूप मिलते हैं, एक छोटी

तान का, दूसरी लम्बी तान का। प्रत्येक चौबोले का आरम्भ दोहे से होता है, जिसका अन्तिम चरण कुण्डलिया की भाँति आगे के चौबोले से कुण्डलित रहता है। इसके सहकारी वाद्यवृन्दों में 'नगाड़ा' अनिवार्य है। नौटंकी के संगीत में नगाड़े का विशेष स्थान होता है। इसके अलावा ढोलक, डफली और हारमोनियम का भी प्रयोग किया जाता है।

नौटंकी की भाषा में हिंदी, उर्दू लोकभाषा एवं क्षेत्रीय बोलियों के शब्दों का अधिक प्रयोग होता है। नौटंकी के संवाद गद्य और पद्य दोनों में बोले जाते हैं। पात्रों के अनुसार भाषा का रूप भिन्न नहीं होता। नौटंकी की भाषा लाक्षणिक ना होकर सरल और सुबोध होती है।

सुल्ताना डाकू उर्फ गरीबों का प्यारा

'सुल्ताना डाकू' के नाम से प्रसिद्ध सुलतान सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में हुआ था। वे घुमंतू मानी जाने वाली भांतू जाति से संबंधित थे। इस जाति के लोग खुद को महाराणा प्रताप की पीढ़ी से सम्बद्ध मानते हैं। माना जाता है कि मुगल शासक अकबर से युद्ध के बाद महाराणा प्रताप ने जंगल में शरण ली थी और उनके ही परिवार के कुछ लोग देश के अलग-अलग क्षेत्रों में चले गए। इनमें से जो लोग बिजनौर की तरफ आए उन्हें ही भांतू जाति के रूप में गिना जाने लगा। अंग्रेज सरकार ने भांतू जाति को अपराधी जाति घोषित किया था और वह उनकी गतिविधियों पर लगातार नज़र बनाए रखती थी। बिजनौर के इलाके में गुल्फी नामक एक चोर की कथा भी प्रचलित है। कहा जाता है कि गुल्फी भान्तू जाति से ही संबन्धित था। गुल्फी बहुत ही कुशल चोर था जिसने पुलिस को बहुत दिनों तक परेशान रखा। इस इलाके में यह भी कहानी प्रसिद्ध है कि सुल्ताना डाकू का दादा भी एक बहुत शातिर डाकू था और उसे गुल्फी का अवतार माना जाता था। सुल्ताना की माँ इसी इलाके के कांठ गाँव की रहनेवाली थी। अंग्रेजों ने कांठ के भांतू जाति के लोगों को नवादा के साल्वेशन आर्मी कैम्प में पुनर्वासित कर दिया था। सुल्ताना का बचपन भी वहीं बीता। अंग्रेज अधिकारियों का मानना था कि कैम्प में रहने से इस समुदाय के बच्चों को एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा मिलेगी।

सुल्तान सिंह उर्फ सुल्ताना डाकू अपने जीवन में काफी प्रसिद्ध हो गया था। उसके बारे में यह आम धारणा थी कि वह केवल अमीरों को लूटता था और लूटे हुए माल को गरीबों में बाँट देता था। यह एक तरह से सामाजिक न्याय करने का उसका तरीका था। उसके बारे में यह भी कहा जाता है कि उसने कभी किसी की हत्या नहीं की। यह अलग बात है कि उसे एक गाँव के जमींदार की हत्या के आरोप में फांसी की सजा हुई थी। सुल्ताना ने अपने अपराधों के चलते उत्तर प्रदेश से लेकर पंजाब और मध्य प्रदेश में आतंक फैलाया हुआ था। सुल्ताना का मुख्य कार्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश के पूर्व में गोंडा से लेकर पश्चिम में सहारनपुर तक फैला था। पुलिस उसके पीछे हमेशा लगी रही लेकिन वह अपनी चालाकी से हर बार बच जाता था। कहते हैं कि वह डकैती डालने से पहले लूटे जाने वाले परिवार को बाकायदा चिठ्ठी भेजकर अपने आने की सूचना दिया करता था।

भारत में पर्यावरण रक्षक के रूप में प्रसिद्ध जिम कॉर्बेट ने अपनी प्रसिद्ध किताब 'माई इंडिया' में सुल्ताना डाकू के बारे में एक पूरा अध्याय लिखा है। जिम कॉर्बेट ने अपनी इस किताब में सुल्ताना को रोबिन हुड कहा है और उस अध्याय का शीर्षक है 'सुल्ताना: इण्डियाज़ रोबिन हुड'। इस अध्याय में सुल्ताना के बारे में जिम कॉर्बेट लिखते हैं-" एक डाकू के तौर पर अपने पूरे जीवन में सुल्ताना ने किसी निर्धन आदमी से एक कौड़ी भी नहीं लूटी। गरीबों के लिए उसके दिल में एक विशेष जगह थी। जब जब उससे चंदा माँगा गया उसने कभी इनकार नहीं किया और छोटे दुकानदारों से उसने जब भी कुछ खरीदा उस सामान का हमेशा दो गुना दाम चुकाया।" अपने अंतिम वर्षों में वह अपने कार्यक्षेत्र को मुख्यतः कुमाऊँ के तराई-भाबरत से लेकर नजीबाबाद तक सीमित कर चुका था। जिम कॉर्बेट के

सुल्ताना से संबन्धित अध्याय में कई बार कालाढूंगी, रामनगर और काशीपुर आदि क्षेत्रों के नाम का ज़िक्र हुआ है। कहा जाता है कि सुल्ताना ने नजीबाबाद में एक पुराने वीरान किले को अपना गुप्त ठिकाना बना लिया था। करीब चार सौ वर्ष पहले नवाब नजीबुद्दौला द्वारा इस किले का निर्माण कराया गया था। इस किले के अवशेष आज भी यहाँ मौजूद है। इस इलाके की आम जनता में सुल्ताना इतना अधिक लोकप्रिय था कि आज भी उस किले को नजीबुद्दौला का नहीं बल्कि 'सुल्ताना का किला कहा जाता है।

सुल्तान सिंह खुद को महाराणा प्रताप का वंशज मानता था लेकिन उसकी शारीरिक बनावट उसके इस दावे को खारिज करता था। वह छोटे कद का सांवले रंग का एक साधारण सा दिखने वाला आदमी था जिसकी ढंग की दाढ़ी-मूंछें भी नहीं थीं। उसके मन में महाराणा प्रताप के लिए विशेष सम्मान था जबकि जमींदार और साहूकार वर्ग के लिए उसके दिल में नफरत के सिवा कुछ नहीं थी। उसके इस सम्मान और नफरत के भाव को इन दो उदाहरणों से समझा जा सकता है कि उसने अपने घोड़े का नाम चेतक रखा हुआ था और कुत्ते का नाम राय बहादुर।

सुल्ताना डाकू के गिरोह में लगभग तीन सौ सदस्य थे। उनके पास आधुनिक हथियार तो थे ही वे बहुत ही वफादार और अनुशासित भी थे। उसके गिरोह के सामने पुलिस भी भयभीत रहती थी। चूंकि सुल्ताना अपने इलाके के ग़रीबों की खूब मदद किया करता था इसलिए गरीबों में ही उसके बहुत सारे जासूस मौजूद थे जो पुलिस या जमींदारों की हर गतिविधि की जानकारी सुल्ताना तक पहुंचा देते थे। उसने ब्रिटिश सरकार की नाक में दम कर रखा था इसलिए उसे पकड़ने के लिए पुलिस ने अपनी पूरी ताकत लगा दी थी। इसके बावजूद उसे पकड़ नहीं पाई। अंततः टेहरी रियासत के राजा के अनुरोध पर ब्रिटिश सरकार ने सुल्ताना को पकड़ने के लिए एक तेज तर्रार अंग्रेज़ अफसर फ्रेडी यंग को लगाया। तीन सौ सिपाहियों और पचास घुड़सवारों की फ़ौज लेकर फ्रेडी यंग ने गोरखपुर से लेकर हरिद्वार के बीच चौदह बार छापेमारी की लेकिन उसे असफलता ही हाथ लगी। यंग ने सुल्ताना को पकड़ने के लिए साम दाम दंड भेद सभी तरह की युक्ति अपनाई और अंततः छल से 14 दिसंबर 1923 को सुल्ताना को नजीबाबाद जिले में गिरफ्तार कर हल्द्वानी की जेल में बंद कर दिया। सुल्ताना के साथ उसके साथी पीताम्बर, नरसिंह, बलदेव और भूरे भी गिरफ्तार हुए थे। इस पूरे मिशन में जिम कॉर्बेट ने भी यंग की मदद की थी। नैनीताल की अदालत में सुल्ताना पर मुकदमा चलाया गया और इस मुकदमे को 'नैनीताल गन केस' कहा गया। सुल्ताना को फांसी की सजा सुनाई गयी। हल्द्वानी की जेल में 8 जून 1924 को जब सुल्ताना को फांसी पर लटकाया गया उस समय उसकी उम्र तीस वर्ष भी नहीं हो पाई थी। पुलिस अधिकारी फ्रेडी यंग का नाम भी इतिहास में सुल्ताना के साथ अमिट रूप से दर्ज हो गया।

यह भी कहानी प्रचलित है कि फ्रेडी यंग ने सुल्ताना की मृत्यु के बाद उसके बेटे और पत्नी की मदद की। इस बात के प्रमाण हैं कि फ्रेडी यंग ने सुल्ताना की पत्नी और उसके बेटे को भोपाल के नज़दीक बसाया था। बाद में उसने उसके बेटे को अपना नाम दिया और उसे पढ़ने के लिए इंग्लैण्ड भेजा। कहते हैं फ्रेडी यंग ने ऐसा करने का सुल्ताना से वादा किया था क्योंकि वह सुल्ताना की बहादुरी से प्रभावित था। सुल्ताना की मौत के बाद उसे याद करते हुए जिम कॉर्बेट ने यह भी लिखा है – "समाज मांग करता है कि उसे अपराधियों से बचाया जाय और सुल्ताना एक अपराधी था। उस पर देश के कानून के मुताबिक़ मुकदमा चला, उसे दोषी पाया गया और उसे फांसी दे दी गयी। जो भी हो, इस छोटे से आदमी के लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है जिसने तीन साल तक सरकार की ताकत का मुकाबला किया और जेल की कोठरी में अपने व्यवहार से पहरेदारों का दिल जीता।" जिम आगे लिखते हैं- उस पर पैदा होते ही अपराधी का ठप्पा लग गया था और उसे पूरा मौका नहीं दिया गया और यह कि जब उसके हाथ में ताकत थी उसने गरीबों को कभी नहीं सताया और यह कि जब बरगद के एक पेड़ के पास मेरी उससे मुलाक़ात हुई उसने मेरी और मेरे साथियों की जान बख्श दी थी। आखिर में इस बात के लिए कि जब वह फ्रेडी से मुलाक़ात करने गया तो उसके हाथों में चाकू या

रिवॉल्वर नहीं बल्कि एक तरबूज़ था।"

प्रसिद्ध लेखक सुजीत सर्राफ ने कन्फेशन ऑफ सुल्ताना डाकू नामक एक किताब लिखी है। इस किताब को 2009 में पेंग्विन इण्डिया ने प्रकाशित की है। सुजीत सर्राफ ने किताब की शुरुआत में उसे फांसी दिए जाने से ठीक पिछली रात का ज़िक्र किया है। सुल्ताना को एक अँगरेज़ अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल सैमुअल पीयर्स के सम्मुख अपने जीवन के बारे में बताते हुए दिखाया गया है। सुल्ताना कहता है कि चूंकि वह एक गरीब परिवार से था, उसकी माँ और उसके दादा ने उसे नजीबाबाद के किले में भेज दिया जहां मुक्ति फ़ौज यानी साल्वेशन आर्मी का कैम्प चलता था। इस कैम्प में सुल्ताना और अन्य भांतुओं को धर्मांतरण कर ईसाई बनाने के अनेक प्रयास किये गए लेकिन वह वहां से भाग निकला। यहीं से उसके डकैत जीवन का आरम्भ हुआ।

सुल्ताना के बारे में कई कहानियां प्रचलित हैं। कहा जाता है कि डाका डालने में निपुण सुल्ताना अपने मुंह में चाकू भी छिपा सकता था और समय आने पर उसका उपयोग भी कर सकता था। जहाँ तक सुल्ताना डाकू के व्यक्तिगत जीवन का प्रश्न है उसके साथ जोड़ कर देखी जाने वाली स्त्रियों में फूल कुंवर और डकैत पुतलीबाई के नाम सामने आते हैं लेकिन प्रामाणिक रूप से कुछ भी साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। यह उचित भी है कि ऐसे आकर्षक और विरोधाभासी जीवन के स्वामी का इतिहास फंतासियों, कल्पनाओं और मिथकों के आवरणों में ढंका हुआ रहे।

लोक में सुल्ताना की प्रसिद्धि और उसकी कहानियों ने फिल्म निर्माताओं को भी आकर्षित किया है। सबसे पहले 1956 में मोहन शर्मा ने जयराज और शीला रमानी को लेकर आर. डी. फिल्म्स के बैनर तले 'सुल्ताना डाकू' फिल्म का निर्माण किया था। उसके बाद 1972 में निर्देशक मुहम्मद हुसैन ने भी फिल्म 'सुल्ताना डाकू' बनाई जिसमें मुख्य किरदार दारा सिंह ने निभाया था। अजीत और हेलेन इस फिल्म में दूसरे सहायक किरदार निभाये थे। सुल्ताना के जीवन ने लेखकों और कलाकारों को भी आकर्षित किया। सुल्ताना के जीवन पर हाथरस, उत्तर प्रदेश के रहने वाले नथाराम शर्मा गौड़ ने 'सुल्ताना डाकू उर्फ़ गरीबों का प्यारा' नाम से किताब लिखी। लखनऊ जिले के रहने वाले लेखक अकील पेंटर ने 'शेर-ए-बिजनौर: सुल्ताना डाकू' शीर्षक किताब लिखी जिस पर आधारित नाटकों पर अनेक नौटंकियां खेली जाती रहीं हैं और उत्तर प्रदेश और बिहार के गाँवों-शहरों में दशकों तक इनका डंका बजता रहा।

नौटंकी – सुल्ताना डाकू उर्फ गरीबों का प्यारा

प्रसिद्ध नौटंकी 'सुल्ताना डाकू' ऐतिहासिक पात्र सुल्तान सिंह के जीवन को आधार बना कर लिखी गई है। इसमें लेखक ने अपनी प्रतिभा से सुल्तान सिंह के बारे में प्रचलित कहानियों को भी शामिल कर लिया है। कहा जा सकता है कि यह नौटंकी इतिहास और कल्पना के मणिकांचन योग से बनी है। उत्तर प्रदेश और आस-पास के राज्यों में 'सुल्ताना डाकू' नौटंकी अत्यंत लोकप्रिय है और इसका सामाजिक-साहित्यिक महत्व भी है। 'सुल्ताना' डाकू नौटंकी उत्तर प्रदेश के साथ-साथ अन्य हिन्दी प्रदेशों में बहुत ही लोकप्रिय रही है। नौटंकी की एक प्रमुख विशेषता होती है कि उसमें धर्म या मानवधर्म की सहज व्याख्या सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में की जाती है। नौटंकी में सबसे प्रसिद्ध 'सुल्ताना डाकू', 'सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र' और 'वीर अमर सिंह राठौड़' की विशेषता भी यही है कि इन तीनों में मानवीय मूल्यों की स्थापना पर विशेष जोर दिया गया है। इसकी लोकप्रियता का आधार इसमें अभिव्यक्त मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा और इसका प्रतिरोधी स्वर है। अपने प्रतिरोधी स्वर के कारण सुल्ताना को समाज का शोषक तबका डाकू कहता है और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के कारण वह शोषितों के बीच 'प्यारा' या 'मसीहा' की उपाधि पाता है।

नौटंकी की शुरुआत में नौटंकीकार मंगलाचरण के बाद सुल्ताना डाकू का परिचय देते हुए कहता है कि उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में नजीबाबाद नामक एक शहर है वहीं सुल्ताना डाकू का जन्म हुआ था। वह बहुत ही बहादुर और बुद्धिमान है। वह अमीरों को लूटता है और गरीबों व असहायों की मदद करता है। उसके गिरोह में तीन सौ डाकू हैं

और वे वही करते हैं जो सुल्ताना डाकू कहता है। वह पुलिस से बचने के लिए जंगल में रहता है और उसकी एक फूल कुंवर नाम की एक प्रेमिका है जिसे वह अपनी जान से भी ज्यादा प्रेम करता है। उसके बाद नौटंकी की शुरुआत होती है। मंच पर आकर सुल्ताना डाकू अपने साथियों से कहता है कि मेरी बातें ध्यान से सुनो। तुम लोग कभी भी किसी अमीर से मत डरना और जीवन भर गरीबों की मदद करना। उसके सभी साथी ऐसा ही करने का वचन देते हैं।

इस नौटंकी में सुल्ताना का प्रतिरोध तत्कालीन भारतीय समाज के तीन शोषक तत्वों से है। वह एक साथ अंग्रेज़ प्रशासन, जमींदारों और साहूकारों से संघर्ष करता है। अंग्रेज़ सरकार ने नई भूमि व्यवस्था लागू कर जमींदारों और साहूकारों को जन्म देती है और अपनी ताकत से उनकी सुरक्षा भी करती है। सुल्ताना डाकू इन तीनों तत्वों को खत्म करना चाहता है। इस आधार पर उसकी छवि भारत की स्वतंत्रता के एक सिपाही के रूप में भी उभरती है तो दूसरी तरफ वह गरीबों की मदद करने वाले एक मसीहा के रूप में भी हमारे सामने आता है। वह अपने गिरोह के साथियों से कहता भी है-

मदद गरीबों की हरदम ऐ मेरे दोस्त करना।
लेकिन दौलतमंदों की दहशत से कभी न डरना।।
लाना कुल जर लूट बेख़तर गलों पर खंजर धरना।
जहां तक हो पेट यतीमों के उस जर से भरना।।

अंग्रेजी शासन से पहले भारत में जो भूमि व्यवस्था कायम थी उसमें किसान ही खेतों के मालिक होते थे। उन्हें राजा को लगान देना पड़ता था जो कि उनके उत्पादन का कुछ हिस्सा होता था। अंग्रेज़ सरकार ने संयुक्त प्रान्त ( वर्तमान उत्तर प्रदेश ) में महालवाड़ी व्यवस्था लागू की थी। इस व्यवस्था के अनुसार भू-राजस्व का निर्धारण पूरे गांव के उत्पादन के आधार पर किया जाता था। इसमें गांव के लोग अपने मुखिया या प्रतिनिधि के द्वारा निर्धारित समय-सीमा के अंतर्गत लगान देने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले लेते थे। अंग्रेज़ सरकार ने अपने फायदे के लिए असीमित लगान की वसूली शुरु कर दी। ऐसी स्थिति में गांव के मुखिया ने भी अधिक से अधिक लगान वसूल करना शुरु कर दिया। परिणामस्वरुप वे एक नए जमींदार वर्ग के रूप में उभरे। किसानों को लगान की अदायगी के लिए कर्ज लेने को विवश होना पड़ा जिससे एक अन्य शोषक साहूकार वर्ग का जन्म हुआ।

बड़े पैमाने पर कर्ज न चुका पाने के कारण किसानों की जमीनों पर जमींदारो-साहूकारों ने कब्जा कर लिया और उन पर कर्ज का बोझ साहूकारों ने लाद दिया। किसानों की इसी स्थिति को इंगित करते हुए प्रेमचन्द ने कहा था कि ' भारतीय किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है और कर्ज में ही मर जाता है। यदि वह अपनी अलग पीढ़ी के लिए कुछ छोड़ जाता है तो वह कर्ज ही है जिससे उसकी पीढ़ी को जीवन भर चुकाना पड़ता है। सुल्ताना किसानों को कर्ज से मुक्त कराने का भी प्रयास करता हुआ दिखाई देता है। साहूकार या महाजन किसानों को इसी शर्त पर कर्ज देते थे कि समय पर अदायगी न करने की स्थिति में उनकी जमीनों पर कब्जा कर लेंगे। सुल्ताना उन साहूकारों के घर में भी डाका डालता है और उनसे पैसे लूटकर किसानों में बांट देता है ताकि उन्हें कर्ज के दुष्चक्र से मुक्त किया जा सके। अंग्रेज़ प्रशासन, जमींदार और साहूकारों ने मिलकर शोषण का एक ऐसा तंत्र विकसित किया जिसमें किसानों का जीवन दयनीय हो गया। सुल्ताना शोषण के इस पूरे तंत्र के खिलाफ संघर्ष करता है ताकि गरीबों की उनसे रक्षा की जा सके। वह डंके की चोट पर पुलिस को बताकर जमींदारों और साहूकारों के यहां डकैती करता है। वह पुलिस अधिकारी यंग को चिट्ठी लिखकर बताता है कि जमींदार खड़ग सिंह के घर डकैती करने जा रहा है। वे रोक सकते हैं तो रोक लें। अपनी चिट्ठी में वह लिखता है-

जी हां बिल्कुल ही इसमें लिखा साफ है,

नौ मई को मैं पहुंचू खड़गसिंह के घर।
जो जमींदार हैं, गंगापुर गांव के,
डाका डालूंगा इसमें न समझो कसर।

जमींदार से उसकी सारी जमा-पूंजी जिसे उसने गरीबों के शोषण से इकट्ठा की है, छीन लेता है। वह साहूकार रग्घूमल और सेठ से उनके धन तो लूटता ही है उन्हें उनके अपराधों की सजा भी देता है। रग्घूमल को आग की गर्मी में तड़पाता भी है। जब उसके साथी रग्घूमल को पकड़कर लाते हैं तो वह कहता है-

प्रधान जी जरा आग तो जलवाइये।
सेठ को सर्दी सता रही है,
मेरे हुक्म से इनको तपाइये।

सुल्ताना जो भी धन अमीरों से लूटता है उसे गरीबों और अपने साथियों में बांट देता है। अपने पास कुछ भी नहीं रखता। वह कहता है-

है हमेशा से मेरा यही कायदा
सूम जोड़े हैं धन उनको लूटूँ हूं मैं,
और गरीबों को पहुंचाता हूं फायदा।

एक बार उसकी प्रेमिका फूल कुंवर उसे डकैती छोड़ने और धन संचय के लिए कहती है तो सुल्ताना उसे भी समझाते हुए कहता है-

प्यारी कंगाल किसको समझती हो तुम,
कोई मुझसा न तबंगर न रस्के कमर
जब हो ख्वाहिश मुझे लाऊं दम भर में तब,
मेरी दौलत जमा है अमीरों के घर।

सुल्ताना अमीरों के धन को अपना धन मानता है और अपने धन को गरीबों का धन कहता है। यह एक समाजवादी सोच है। सुल्ताना उस समय समाजवादी विचारों वाली बातें कहता है जब यह विचार भारत में आया भी नहीं था। सुल्ताना द्वारा गरीबों की मदद किए जाने के कई प्रसंग नौटंकी में हैं। एक बार यंग साहब एक डाकिए को जासूस बनाकर सुल्ताना के पास भेजते हैं। सुल्ताना उस डाकिए को पकड़ लेता है और उसे मौत की सजा देने वाला ही होता है कि उसकी दुख भरी बातें सुनकर उसका हृदय पसीज जाता है। वह उसकी मदद करने के लिए उसके गांव आने का वादा करता है। डाकिया सारी बातें यंग को बता देता है। जब सुल्ताना मदद करने के लिए डाकिया के गांव पहुंचता है तो वहीं यंग द्वारा गिरफ्तार कर लिया जाता है। जब यंग बताता है कि उसकी गिरफ्तारी के पीछे डाकिया का हाथ है तो वह पूरी तरह टूट जाता है-

अच्छा आं हो सख्त अफसोस है,
हे प्रभु तेरा कैसा ये संसार है।
जिससे कमजर्फ पैदा हो इस जोर के,
धोखा उसको ही दें, जो मददगार हैं।

सुल्ताना डाकू जमींदार खड़क सिंह की पुत्री सुंदरी से जबरदस्ती विवाह करने का प्रयास करता है। यह एक शोषक को सजा देने का उसका अपना तरीका है लेकिन किसी के अपराध के लिए उसकी पुत्री को सजा देना सही प्रतीत नहीं होता है। सुल्ताना केवल साहूकार का धन ही नहीं लूटता बल्कि उसे उसके अपराधों की सजा भी देता है।

सुल्ताना साहूकार के अपराधों के लिए तरह-तरह के दंड देता है जैसे उठक-बैठक कराना आदि। उसे गरीब और किसान अपना मसीहा मानते हैं और किसी भी अत्याचार पर अपने उस मसीह का आह्वान करते हैं।

है हमेशा से यही मेरा कायदा
सम जोड़े हैं धन उनको लूटा हूं मैं
और गरीबों को पहुंचाता हूं फायदा

नौटंकी में एक प्रसंग आता है डाकिए का। एक दिन एक डाकिया कहता है कि उसका वेतन केवल नौ रुपये प्रति माह है और इसी में उसे छह लोगों का परिवार चलाना पड़ता है। डाकिया की इस दुख भरी बातों को सुनकर सुल्ताना उसे चार हजार रुपए देता है। बाद में यही डाकिया पुलिस का मुखबिर बन जाता है और सुल्ताना को गिरफ्तार करवा देता है। इस घटना से सुल्ताना को बहुत दुख होता है। अपनी गिरफ्तारी से पूर्व ही वह सपने में देखता है कि वह गिरफ्तार हो गया है। उसकी नींद अचानक टूट जाती है और वह अपनी प्रेमिका फूल कुंवरी को घर लौट जाने के लिए कहता है। सुल्ताना की इन बातों से स्त्री के प्रति उसकी मानसिकता और जिम्मेदारी का पता चलता है। वह अपनी गिरफ्तारी के बाद सभी घटनाओं के लिए खुद को जिम्मेदार ठहराता है ताकि अपने सभी साथियों को दोषमुक्त किया जा सके। वह कहता है " अफसोस इनको कीना क्यों गिरफ्तार

ये तो बेकसूर सब बस मैं हूँ गुनहगार
इन पर न डकैती का झूठा ऐब लगाओ
मेरे हुक्म से करते थे सब ये तो मार-मार

सुल्ताना का साथी शेर सिंह भी उसे एक बार धोखा देता है। उस समय उसके शत्रु यंग साहब ने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए उसके साथ किसी भी तरह का दुर्व्यवहार नहीं होने देता है। यंग साहब जब सुल्ताना को गिरफ्तार करते हैं तो उसकी बहादुरी का सम्मान करते हुए उसे हथकड़ी नहीं लगाते। सुल्ताना जीवन भर सच्चाई और ईमानदारी का पक्षधर रहा इसी कारण यंग उसकी मदद करता है।

सुल्ताना डाकू में नृत्य-संगीत, प्रतिरोध स्वर, संवाद आदि नाटक के सभी तत्वों की उपस्थिति के कारण आज भी आम जनमानस में लोकप्रिय है। इसकी भाषा फ़ारसी, उर्दू, खड़ी बोली का मिश्रित रुप है। संवादों के बीच में देशज शब्दों का भी अच्छा प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं फ़ारसी और देशज भाषाओं के शब्दों को मिलाकर भी नए शब्द बनाए गए हैं। नाटक के आरंभ में मंगलाचरण और अंत में नौटंकीकार के ऊपर एक छंद लिखकर उसे अभिव्यक्त किया गया है।

•